International Journal of Humanities and Social Science Invention (IJHSSI)
ISSN (Online): 2319 – 7722, ISSN (Print): 2319 – 7714
www.ijhssi.org ||Volume 8 Issue 10 Ser. I ||October, 2019 || PP.65-68

''काष्ठ उत्कीर्ण मानव आकृति किन्नौर के सन्दर्भ में''

डॉ० हेमन्त कुमार राय
ऐसोसिएट प्रोफेसर
चित्रकला मेवाड़

मीनाक्षी चंदेल
शोधछात्रा
विश्वविद्यालय चितौड़गढ़

एम. एम. एच. कॉलेज, गाजियाबाद

किन्नौर की काष्ठकला भारत में सबसे प्रसिद्ध काष्ठकला है किन्नौर के प्रसिद्ध

बद्रीनारायण मंदिर में हमें काष्ठ निर्मित आकृतियों के दर्शन होते हैं इन्हें देखकर अलौकिक आनंद की अनुभूति होती है इन मंदिरों में मानव आकृतियों को आलिंगन मुद्रा में दर्शाया गया है जोकि कामसूत्र को दर्शाती है। इन आकृतियों में आलौकिक और देवी भाव के दर्शन होते हैं।

'काष्ठकला' एक हस्तकला है जो भारतीय राज्य 'हिमाचल प्रदेश में बहुत प्रसिद्ध है। काष्ठ को आम भाषा में लकड़ी कहा जाता है। इस कला में लोग लकड़ी पर विभिन्न प्रकार की कलात्मक वस्तुऐं बनाते हैं। 'काष्ठकला' का अर्थ है लकड़ी पर तराशे हुए चित्र
या काष्ठ निर्मित भवन, मठ, किले, मंदिर इत्यादि। हिमाचल प्रदेश के प्राचीन मंदिर काष्ठ
निर्मित है। काष्ठकला के उत्तम प्रमाण हिमाचल के किनौर, चंबा और कुल्लू जिले में मिलते हैं।

हिमालयी क्षेत्रों में मंदिरों के दरवाजे, खिड़कियों व स्तम्भों पर उत्कीर्णित की गई कलात्मक काष्ठकला हर पर्यटक का मन अपनी ओर आकर्षित करती है। काष्ठकला केवल मंदिरों में ही नही बल्कि पुराने घरों, भवनों और किलों में भी देखी जा सकती है।

ये कला प्रदेश के शिल्पियों की विचित्र कलाकारिता का प्रमाण है। हिमाचल की प्राचीन रियासतों के समय के बने महलों एवं गांव के आवासों में विचित्र प्रकार के चित्रों व बेल–बूटों का काम महत्वपूर्ण समझा जा सकता है। हिमाचल प्रदेश के अनेक मंदिर और किले काष्ठकला से निर्मित है। इनके निर्माण में देवदार अखरोट व शीशम की लकड़ी का प्रयोग किया गया है। इन काष्ठ से बने मंदिरों की दीवारों, छतों तथा खम्बों में अदभुत् काष्ठ की नक्काशी की गई है। शास्त्रीय शैली के अनुरूप देवदार तथा कैल की लकड़ी पर देवी–देवताओं अप्सराओं, गणों और गणिकाओं की प्रतिमाएं बड़ी अदभुत् प्रतिभा का प्रदर्शन करते हुए अंकित की गई है। इन मंदिरों में लकड़ी का अधिक प्रयोग होने तथा लकड़ी पर उकेरी गई इन 'काष्ठकला' कृतियों के कारण इसे काष्ठकला का नाम दिया गया है।

यह मंदिर हिन्दू और बौद्ध संस्कृति का मिश्रित स्वरूप है। यह मंदिर पत्थर और काष्ठ से निर्मित है। किन्नौर जनपद में बदरीनारायण का मंदिर प्रसिद्ध है। यहां के लोग बद्रीनारायण देवता को पूजते है। मंदिर के चारों ओर काष्ठ की बनाई हुई दीवारें दिखाई देती है। और दीवारों पर देवी–देवताओं की सुन्दर आकृतियां और फूलों की आकृतियां उत्कीर्णित की गई है। देवता बद्रीनारायण कामरू के बद्रीनारायण का बड़ा भाई माना जाता है। बटसेरी में बदरीनारायण मंदिर का जीर्णोद्धार किया गया है। मुख्य मंदिर के साथ अन्य देवताओं के मंदिर भी बनाए गए है। बटसेरी गांव एक पुराना गांव है। कहा जाता है कि जब बस्पा झील सूख गई तो यहां यह गांव बसा। पूरी बस्पा घाटी पहले

झील थी जो सूख गई। इस गांव का पुराना नाम युग बसेरा था। बटसेरी में बद्रीनारायण शासक है। देवता प्रजा की रक्षा करता है तो अपराधियों को दंड भी देता है। यदि कोई चोरी भी करे या अन्य अपराध करे तो देवता दंड देता है। अपराधी को दंडित किया जाता है।

किन्नौर में अभी भी ऐसे काष्ठकलाकार है जो लकड़ी में अदभुत नक्काशी करते है। मंदिर के भीतर की छत में अदभुत नक्काशी की गई है। मंदिर के दोनों द्वारों पर देवी–देवताओं के सुन्दर चित्र बनाए गए हैं द्वार के एक ओर श्रीकृष्ण, शिव, हनुमान, भरतमिलन, वीणावादक के चित्र हैं तो दूसरी तरफ शिव, पार्वती, लक्ष्मी, गणेश, मत्स्य और बुद्ध चित्रित है। इसी तरह राम, कृष्ण, अर्जुन, विष्णु, भक्त ध्रुव, शेषनाग के चित्र भी उकेरे गए हैं। इस मंदिर में जहां एक तरफ भगवान को दर्शाया गया है। वहीं दूसरी तरफ मानव आकृतियों को भी दिखाया गया है। मानव आकृतियां आपस में आलिंग्न मुद्रा में है वहीं कुछ आकृतियां रात्रि क्रीड़ा करते हुए दिखाई गई है। यह आकृतियां खजुराहों के मंदिर की आकृतियों जैसी बनाई गई है। या यूं कहें कि यहां के कलाकारों ने खजुराहों के कलाकारों से प्रेरणा लेकर किन्नौर में काष्ठ पर मानव आकृतियों का निर्माण किया होगा।

इसमें नर–नारी को दर्शाया गया है। यह आकृतियां कामसूत्र को दर्शाती हैं जिस तरह से खजुराहों के मंदिर में मूर्तियां बनी हुई है। इस मंदिर के दरवाजों पर बनी हुई मूर्तियां यहां आने वालें सैलानियों का ध्यान अपनी ओर आर्कषित करती है यहां के बारे में सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि काम कला के आसनों में दर्शाये गये स्त्री–पुरूषों के चेहरे पर एक आलौकिक और देवी आनंद की आभा झलकती है। इसमें जरा भी अश्लीलता का आभास नहीं होता है। ऊपर नीचे बेल–बूटे बनाए गए हैं तथा बीच में मानव आकृतियां बनाई गई हैं मानव आकृतियों को भी अलग–अलग भागों में विभाजित किया गया है। हर एक भाग में एक स्त्री और एक पुरूष को काम कला में बनाया गया है। हर भाग में काम मुद्राओं को भी अलग–अलग दर्शाया गया है। मंदिर की छतों पर चारों ओर झालर और मंदिर की छत पर और दो मंजिले हम देख सकते हैं। और यह मंदिर काष्ठ और पत्थर का उपयोग करके बनाया गया है। यहां की काष्ठकला अतिशय

आर्कषक है।

मां उषा देवी का कलात्मक मंदिर–

भावानगर से ठीक ऊपर है निचार। निचार में उषा देवी का लकड़ी से निर्मित लकड़ी का कलात्मक मंदिर है। मंदिर गांव से ऊपर की ओर है यह मंदिर काष्ठकला का उत्तम प्रमाण है। मंदिर की बाहरी दीवार की लकड़ी पर आकर्षक नक्काशी हुई है। मंदिर के भीतर देवी का पुजारी ही प्रवेश करता है। और जो अविवाहित होता है। यहां से गुजरने वाला हर शक्स मंदिर में शीश झुकाना नहीं भूलता है यह मंदिर किन्नौर के लोगों की आस्था का स्थान है। इस मंदिर के दरवाजों के दोनों ओर में जो दीवार है वहां पर देवी–देवताओं को काष्ठ पर उत्कीर्ण किया गया है। शंख और नाग देवता को उत्कीर्ण किया गया है। दरवाजे की कमान पर लकड़ी में उत्कृष्ट नक्काशी की गई है। मंदिर के चारों तरफ काष्ठ की झालर है। और स्तंभों पर बहुत सुन्दर कारीगरी देखने को मिलती है। जहां विभिन्न आकृतियां हम देख सकते हैं यह शिव देवता का मंदिर है। जोकि निचार में बनाया गया है। मंदिर के चारों ओर अनेक हिन्दू देवी–देवताओं और ड्रैगन, सांप, जैसे आकृतियां उत्कीर्णित की गई हैं। यहां की काष्ठकला पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करती है, मोहित करती है। मां उषा देवी को यहां के लोग बड़े आदर भाव से पूजते हैं, नारायण नागिनी मंदिर किन्नौर जिले में स्थित यह मंदिर 5000 वर्ष पुराना है ऐसे यहां के लोगों की लोककथा में हमें देखने को मिलता है। इस मंदिर की शैली बौद्ध संस्कृति और हिन्दू संस्कृति का मिश्रित रूप है।

यह मंदिर कल्पा में है। मंदिर के दरवाजे पर दोनों तरफ स्तंभों से लिपटे हुए सांप बनाए गए है। ऊपर दोनों तरफ देवता का मुख बनाया गया है। स्तम्भों पर नक्काशी और दरवाजों पर भी अनेक आकृतियां उत्कीर्णित की गई है। खिड़की के कमान पर अतिशय सुन्दर नक्काशी हम देख सकते हैं। स्तंभों पर नाग देवता की रचना दिखाई देती है। सूर्य

देवता की आकृति भी यहां पर उत्कीर्ण की गई है। किन्नौर के मंदिर की काष्ठकला पूर
` हिमाचल प्रदेश की शान है।

यहां के मंदिरों पर लकड़ी की झालरें लटकाई जाती है। दरवाजों पर, आलों, तख्तों आदि के काष्ठ पर भी शेर, हाथी, सूर्यमुखी तथा देवी–देवताओं के चित्रों का अंकन पहाड़ी मंदिर की एक अपनी अलग विशेषता है। ये अंकन वहां के मंदिर के पुजारी कारदार अथवा वहां के मिस्त्री की कल्पना शीलता पर निर्भर करता है। पौराणिक देवी–देवताओं का यहां पर अंकन दिखाई देता है। भारतीय संस्कृति की विशेषता यहां के मंदिर दर्शाते हैं। अतः किन्नौर के कलाकार आज भी अपनी पुरानी परंपराओं को बचाए हुए हैं और अपनी पुरानी परंपराओं को बचाने और उन्हें संजोए रखने के लिए अथक प्रयास कर रहे हैं इस प्रकार मंदिर के प्राथमिक प्रवेश द्वार को निगमित किया गया है मंदिर में एक बेली में चित्रित किया गया है और प्राथमिक द्वार को भारतीय पौराणिक कथाओं के कई दृश्यों काष्ठ पर उकेरा गया है जिसमें खजुराहों के मंदिरों में निर्मित मूर्तियों की झलक भी दिखाई देती है। इस प्रकार किन्नौर का बदरीनारायण मंदिर अद्वितीय काष्ठकला का परिचय देता है। ऐसा प्रतीत होता है कि यह किन्नौर की वास्तुकला और काष्ठकला एक अदभुत् उदाहरण है।